B.Ed.-I, C-1 : CHILDHOOD AND GROWING UP

Date- 21/04/2020, G.D.M.I.O.H. STUDIESE BUXAR

Asst-Pro- AVADHESH K. SHUKLA

UNIT - 5

TOPIC - विद्यालय में विविधता की समझ

भारत एक विविधताओं का देश है। जहाँ अनेकों प्रकार के ~~भौतिक~~ भौगोलिक और सामाजिक-सांस्कृतिक समूह के लोग निवास करते है। जो वंश, वर्ण, धर्म, लिंग, भाषा, धर्म, जाति, संप्रदाय, समुदाय सामाजिक समूह, आर्थिक स्थिति, योग्यता स्तर, स्वास्थ्य, पेशों, भौगोलिक क्षेत्रों, जलवायु और राजनीतिक झुकाव के लोग रहते हैं। इन्ही के बीच विद्यालय स्थिति होता है, जहाँ इन्ही लोगों के बच्चे शिक्षा ग्रहण करने आते है। विविधता को सकारात्मक रूप में लेकर विद्यालय के संवर्धन और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना सुनिश्चित कर सकते है।

विद्यालय प्रमुख के लिए विविधता का प्रबंधन और विद्यालय समुदाय में हर छात्र को उचित अवसर और सार्थक गुणवत्ता शिक्षा प्रदान करना एक बड़ी चुनौती है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF) और राइट टु एजुकेशन एक्ट 2009 (RTE) के लागू होने के साथ, अनेकता को स्पष्ट रूप से अपनाया गया है। विद्यालय प्रमुख से यह सुनिश्चित करने की अपेक्षा की जाती है कि विविधता को स्टाफ और छात्रों द्वारा विद्यालय और हर कक्षा के भीतर सीखने के एक संसाधन के रूप में देखा जाय। इसके अलावा उनसे सामाजिक पूँजी, मूल संरचना, पाठ्यचर्या संबंधी इनपुटों और सुविधाओं के विकास के लिए आवश्यक पहले कदम के रूप में अपने छात्रों और अभिभावकों के बारे में विस्तृत जानकारी एकत्र करने की अपेक्षा की जाती है।

विद्यालयों में विविधता की सीमा की स्पष्ट और अच्छी समझ का विकास करने की कुंजी डेटा उपयोग करना है। विविधता पर डेटा विद्यालय प्रमुख की निम्न लिखित मदद करता है—

- महत्वपूर्ण क्षेत्रों और मुद्दों की पहचान करने में।
- विद्यालय प्रबंधन कमेटी (स्कूल एम०सी०) के साथ संयुक्त रूप से कार्य योजना का कि कार्यान्वयन करना।

Scanned by CamScanner

— विद्यालय में गुणवत्तापूर्ण अध्यापन और सीखने की प्रक्रिया के समान वितरण को सुनिश्चित करने के लिए, किए गए परिवर्तनों के प्रभाव की निगरानी और मापन करना।

आप अपने विद्यालय के स्थानीय सामाजिक, सांस्कृतिक आर्थिक, भाषाई धार्मिक, भौगोलिक सन्दर्भ का अन्वेषण करना। जिसके उपयोग पर विचार करना और सुनिश्चित करना कि आप, आपके शिक्षक अभिभावक, छात्र, स्टाफ विविधता के प्रति जागरूक हो, समझें तथा मान्यता दें. साथ ही वह सभी छात्रों की सीखने की प्रक्रिया के नतीजों को प्रभावित करती और गहरा असर डालती है।

विद्यालय मे समावेशी शिक्षा को प्रोत्साहित करना। सभी छात्रों को एक समान शिक्षा प्रदान करना तथ किसी प्रकार की वंचना से उन्मुक्त करना।

विविधता से विद्यालय प्रमुख क्या सीख सकते है।

— सभी छात्रों द्वारा हर वर्ष अधिकतम सीखना सुनिश्चित करने में विविधता का महत्व।
— अपने विद्यालय में विविधता से संबंधित मुद्दो को समझने और उनसे निपटने में आपके लिए उपयोगी डेटा के प्रकार और डेटा संग्रहण की प्रकृति।
— सभी छात्रों के शैक्षिक परिणामों को सुधारने और कार्ययोजना बनाने के लिए डेटा एकत्रित कर उपयोग करना।
— सभी छात्रों के लिए बेहतर शैक्षिक परिणामो को सुनिश्चित करने के लिए विविधता पर डेटा के संग्रह विश्लेषण और उपयोग में, शिक्षकों और स्थानीय समुदाय का नेतृत्व करना।

विविधता का महत्व -

सरकारों ने विविधता का महत्व समझने वाली समावेशी समाज के निर्माण में शिक्षा की अहम भूमिका को पहचाना है। विद्यालयी विविधता को पहचानना होगा। आपके विद्यालय में जो समुदाय उपस्थिति है उसे सर्वोत्तम शैक्षिक संसाधन और सीखने की व्यवस्था करनी होगी। आपको यह पहचानना होगा कि विविधता से संबंधित मुद्दे कहाँ पर शिक्षण-प्रक्रिया में बाधक बना सकते है और आपके सभी छात्रों के लिए शैक्षिक परिणामों को सुधारने के लिए रणनीतियां बनानी होंगी।

Scanned by CamScanner

NCF-(2005) में यह उल्लेख है कि समावेशी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और निष्पक्षता से उसके संबंध की आवश्यकता है। शिक्षण-प्रणाली उस समाज से अलग होकर काम नहीं करती है जिसका वह हिस्सा है। भारतीय समाज में मौजूद जाति अनुक्रम, आर्थिक स्थिति और लैंगिक संबंध, सांस्कृतिक विविधता तथा असमान आर्थिक विकास शिक्षा की सुलभता और विद्यालय में बच्चों की भागीदारी पर भी गहरा प्रभाव डालते है। यहाँ अलग-2 सामाजिक, आर्थिक समूह के बीच असमानताओं में प्रतिबिंबित होता है, और विद्यालय में दाखिले और पूरा करने की दर में दिखता है। इस प्रकार ग्रामीण और शहरी गरीबों अनुसूचित जाति जनजाति समुदायों की लड़कियों तथा धार्मिक और अल्पसंख्यकों के बच्चों के असुविधाग्रस्त भाग ~~शैक्षि~~ शैक्षणिक रूप से सबसे अधिक खतरे में होते है। शहरी स्थलों और कई गाँवों में विद्यालय प्रणाली कई स्तरों में विभाजित है।

प्रत्येक विद्यालय का यह कर्तव्य होना चाहिए कि वह समुदाय की जरूरतों के अनुरूप शिक्षा प्रदान करे।

संस्कृति और समाज की विविधता कक्षा में प्रतिबिंबित होती है। विद्यार्थियों की भाषाए, रूचियां और योग्यताएं अलग-2 होती है। विद्यार्थी विभिन्न सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि से आते है। हम इन भिन्नताओं को नजर अंदाज नहीं कर सकते, वास्तव में हमें उनका सम्मान करना चाहिए, क्योंकि वे एक दूसरे और हमारे अपने अनुभव से परे, दुनियां के बारे में अधिक जानने का जरिया बन सकते है। सभी छात्रों को शिक्षा पाने और सीखने का अधिकार है, चाहे उनकी स्थिति, योग्यता और पृष्ठभूमि कुछ भी हो, और इसे भारतीय कानून और अंतरराष्ट्रीय बाल अधिकारों को मान्यता दी गयी है। 2014 ई० में राष्ट्र को अपने पहले संदेश में प्रधानमंत्री मोदी जी ने जाति, लिंग या आय पर ध्यान दिए बिना भारत के सभी नागरिकों का सम्मान करने के महत्व पर जोर दिया। इस संबंध में स्कूलों और शिक्षकों की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है।

हम सभी एक दूसरे के बारे मे पूर्वाग्रह और दृष्टिकोण से मुक्त होना चाहिए। एक अध्यापक के रूप में सकारात्मक रूप से सभी शिक्षार्थियों को सारगर्भित शिक्षा दिया जाना चाहिए।

Scanned by CamScanner

शिक्षा में सबको शामिल करने के लिए मुख्य तीन सिद्धांत अपनाना चाहिए -

(1) देखना (2) आत्म सम्मान करना (3) लचीलापन रखना।

(1) देखना - प्रभावी शिक्षक चौकस, सचेतन और संवेदी होते हैं, वे अपने विद्यार्थियों में हो रहे परिवर्तन को देखते और समझते हैं।

(2) आत्म-सम्मान करना - अच्छे नागरिक आत्मसम्मान करते हैं और अपनी ताकतों और कमजोरियों को जानते हैं। जो दूसरे लोगों के साथ सकारात्मक संबंध बनाते हैं। एक अध्यापक के रूप में आप किसी युवा व्यक्ति के आत्म सम्मान पर उल्लेखनीय प्रभाव डाल सकते और हर छात्रों में आत्मसम्मान की शक्ति बढाने में योगदान कर सकते हैं।

(3) लचीलापन - यदि आपकी कक्षा में कोई चीज विशिष्ट छात्रों, समूहों या व्यक्तियों के लिए उपयोगी नहीं है। तो अपनी योजनाओं को बदलने या गतिविधि को रोकने के लिए तैयार रहे। लचीला होना समायोजन में मदद करता है।

अच्छा दृष्टिकोण विकसित करके विविधता में एकता हर समय ला सकते है जैसे-

- अच्छे व्यवहार करना।
- ऊँची अपेक्षाएं रखना।
- अपने अध्यापन में विविधता का प्रयोग करना।
- शिक्षा को रोजमर्रा के जीवन से जोड़े।
- अच्छे भाषा का उपयोग करें।
- रूढ़िवादिता को समाप्त करें
- एक सुरक्षित, स्वागत करने वाले शिक्षा वातावरण का सृजन करें।

उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि विद्यालय में शिक्षा व्यवस्था समावेशी प्रकृति में होना चाहिए। सभी वर्गों समूहों, भौगोलिक, सामाजिक- सांस्कृतिक समूहों से आये हुए छात्रों को कौशलपूर्ण, सार्थक शिक्षा प्रदान करके, एक सम्पन्न और विकसित भारत के साथ विश्व गुरु बनने की श्रेणी में खड़ा कर सकें।

Scanned by CamScanner